Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Gokul 2

13.C.67.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Vacanāmṛita.

Vachna mest

बचनामृतः ॥१

श्रीगोकुलनाथजीकृत

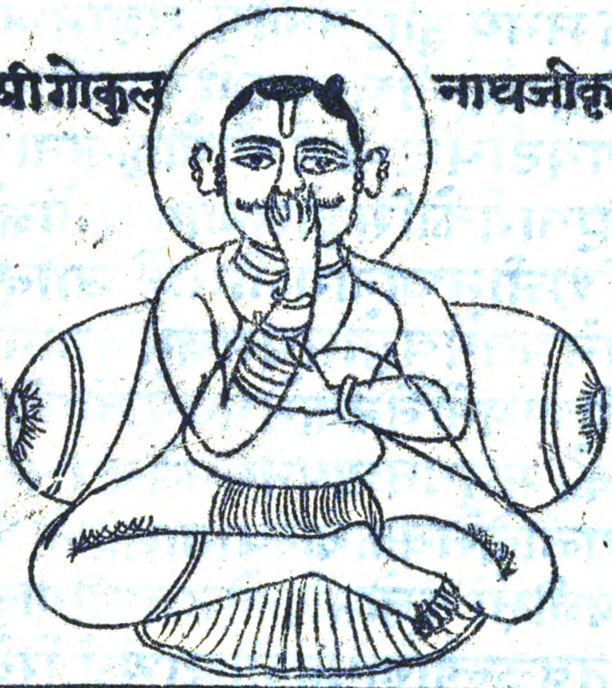

स्थानमथुरा

मुन्शी कन्हैयालाल सम्पादिक के प्रबंध से
मुम्बै उल उलूम नाम निज शिलायंत्र में श्री
युत मुन्शी नवल किशोर मालिक अवध
समाचार की आज्ञानुसार मुद्रित हुआ ॥१
माह जुलाई सन १८८३ ईसवी ॥ 15/7/83

श्रीगणेशायनमः॥

॥ अथश्रीगोकुलनाथजीकृत वचनामृत लिख्यते

तहां एक समय पुष्टिमार्गीय सिद्धांत श्रीगोकुलनाथजी तथा श्रीगुसांईजी चाचाहरिवंशजी तथानागजीभट्टआदि भगवदीय के अर्थ श्रीगोकुलनाथजीप्रतिआप अपनेपुष्टिमार्गको सिद्धांत श्रीमुखसोंकहेहैं सोसुनिकें चाचाहरिवंशजी तथानागजीभाइ आदिअंतर भगवदीय अपनेंमनमें बहोत प्रसन्नभये तापाछें श्री गोकुलनाथजी अपनी बैठकमें पधारे सो श्रीगुसांईजीके वचनामृतको अनुभव अपनेमनमे करतहैं तासमें श्रीगोकुलनाथजीकेसेवक कल्याणभट्टजी आयकें श्रीगोकुलनाथजीसों दंडोतकिये तब श्रीगोकुलनाथजी बोलेनाहीं तबकल्याणभट्टजी हाथजोरिकें ठाड़ेहोय रहेतापाछें चारिघड़ीमें श्रीगोकुलनाथजीऊंचीदृष्टि करिकें कल्याणभट्टकीओरदेखें तबफेरिकल्याणभट्टजी दंडवतकिये तबश्रीगोकुलनाथजी आपकल्याणभट्टसों आज्ञाकीये जोतुमकबके आयेहो तबकल्याणभट्टजी आपबीनतीकीय तबश्रीगोकुलनाथजीप्रसन्नहोयकें श्रीमुखसों आज्ञाकीये जो आजश्रीगुसांईजीअपनेंपुष्टिमार्गको सिद्धांतमोसों कहे हैं सोपुष्टिमार्ग की रीति तो महा कठिनहै सोबनत नाहीं है तब कल्याणभट्टजी श्रीगोकुल नाथजीतेंबीनतीकी

ये जो महाराज कछु हमारे लायक होय सो कृपा करिकें हमसों कहिये हमको आपके श्रीमुख सुनिवेको मनोरथ है और पुष्टिमार्गकी रीति तो महाकठिन है और हमको सुनिवेकोहू अतिदुर्लभ है यह वचन सुनिकें श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट के ऊपर बहोत प्रसन्न भये और श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति आज्ञा कीये· जो यह वार्ता और के आगे कहिवेकी नहीं है तुम भगवद्भक्त हो और पुष्टिमार्गकी रीति सुनिवेमें अत्यंत प्रीति है तातें तुमसों कहत हैं सो मन लगायकें सुनियो तथा हृदयमें धारण करियो सो श्रीगोकुलनाथजी भगवदीय के लक्षण तथा पुष्टी मार्गीय सिद्धांत कल्याणभट्टप्रति कहत हैं सो प्रथम तो अन्याश्रय नरकनो· अन्याश्रय महाबाधक है और आश्रय तो श्रीनाथजी कोही करनो सो आश्रय सिद्ध भए तें सबकार्य होत हैं· सो यह लोक परलोक सब ठिकानें सुख पामत है सो यह जानिकें आश्रय तो एक श्रीजीकोही करनों जो आश्रयको हेत यह है जो अपने प्रभु बिना और काहूकों न मानें· और दूसरे सों भूलकें मनोरथ न करें और अन्य अवतार की अपेक्षा न राखें जीव तथा देह काहूकी न राखे अपेक्षा सों बहुत कठिन है जो काहेतें जो यह संसार तो वृक्षरूप है तिनकी शाखा सो मनके तरंग हैं और वृक्ष है ताको मूल जड है सो बुद्धी है और समय पायकें या वृक्षको मोहरूपी बयार लागत है सो वा बयार सों याके डार शाखा· अपनी रक्षा चाहत है और फल है सो अपनों गिरनको डरपत हैं सो या मोहरूपी बयार के डरतें डार शाखा फल·

फूलटूटनतेडरतहैं औरअपनेमुख्यतो वृक्षकीजडहै सोहढ़है ताते वृक्षकोडरनाहींहै सोडारसाखाफलपत्र अपनेमूलकोदृढजानतनाहींहैं ताते अत्यंतभयकरिकेंदुखितहोतहै तैसेई यहजीवहैं सोसंसाररूपीवृक्षको मोहरूपीबयारकोडरहै तातेंसुद्धकरिकेंअपने मूलको विचारनोंजो अपनेमूलतो श्रीभगवानहैं तिनकोजानतनाहीं ताते अपनेमूलकोभूलिगयोहै औरयाअविद्याकरिकेंएभोबिचार रहतनाहीं जोहमारे मूलभगवानसों सर्वोपरदृढहै हमकोयामोहरूपीबयारकीचिंतानाहीं है इतनीबुद्धिदुष्टस्वभावकरिकें जीवकोंरहतनाहींहै क्योंकिमोहरूपीबयारकेडरतेंडरपतहै औरयासंसारमेंअनेकप्रकारकेदुःखसुखपावतहै तैसेई यामनुष्यकोसंसाररूपीअहंताममतात्मकवृक्षरूपीहै औरडारयाकोकुटंबहै औरसाखायाकीस्त्रीपुत्रपरिवारहै पुत्रमनकी तथादेहसंबंधकी औरअनेकनमनोरथकीतरंगहैं औरफलतोदोय सुखदुःखहै औरमूलयाकोभगवानहै ऐसेअविद्या करिकेमोहरूपीबयारलागेहै तब यह अपने मनमें अत्यंतभयभीतिहोतहै और अपनेमनमेंकहैजोयाबयारतें गिरूंगो यहसंसारकेभयकरिकेंअपने मूलभगवानको भूलगयोहै और अपने कुटुंबरूपीडारसाखासोडालपुटातहै और तिनसों मिलिवेकों अनेकप्रकारकेदुःखसुख को अनुभवकरतहैं यह वृक्षरूपीमनुष्यको मायारूपी अविद्या लागीहै ताते मोहकेवसतेंडरपतहै जोमेरे कुटुंब इस्त्रीपुत्रादिकन कौ दुखहोयगो

यह चिंता याकों मोह रूपी बयार लागेते होतहे तातें अपने मूल भगवान हे सो दृढहें सो मोकों लौकिक अलौकिक की चिंता नाहीं हे तब लौकिक कुटुंब मिलिकें याकों अन्याश्रय करावतहे सो याप्रकार करतहें और लौकिक में कोई सो कहतहें जो तुम देवताकों मनावों तुमको सुखहोयगो तुमारो भलोहोयगो और कोई कहतहें जो तुमारो मित्र भलो होयतो मिलोगे तब तुमारे कष्ट दूरहोयगो और कोई कहतहें जो देवनकी मानताकरेतें भलोहोयगो यह दुबुद्धी जीव ऐसें कहतहें तब यहजीव अन्याश्रय करतहें सो ज्योंज्यों करतहे त्यों त्यों श्रीठाकुरजी सों दूरि परतहे सो अन्याश्रय करि कें भगवान तें वहिर्मुख होतहे और मोह रूपी बयार कैसी हे जो जीवकों भ्रम उपजावतहे सो दृढ अनन्य भक्तहें सो अन्याश्रय सर्वथा नहीं करतहें और जबकछु लौकिक सुखदुःख जीवकों होतहे तब यह दृढता राखतहे और श्रीजी करेंगे सो होयगो में तो दास हों सुखदुःख तो देहके पराई सो होतहे सो देहभोगतें छूटे ऐसी दृढता राखनी और ऐसी दृढता राखत हें तिनको दुख तत्काल निवृत्त होतहे प्रथमतो भगवदीयकों दुखहोतनाहीं और होतहे सो पाछिले प्रारब्ध सों होतहे सो ये भगवदीय मानत नाहीं याप्रकार दृढ आश्रय श्री ठाकुरजीको करे ताको भगवदीय कहिये और जो वेसव होय के अन्याश्रय करतहें और असमर्पित वस्तु खातहें तासों श्री आचार्यजी महाप्रभुजी वहुत दूर रहतहें यह निश्चय जाननो सो यह समझि कें वेस

वको यह भोग्य है जो अन्याश्रीयनकरनों असमर्पित नखानों तातें अपनें मनमें दृढ़ आश्रय एक श्रीजीकोही करनों तब वैष्णव यालोक परलोक में सुखपावेंहैं याप्रकार श्रीगोकुलनाथजीकल्याणभट्ट प्रतिकहेहैं १

इतिश्रीगोकुलनाथजीकृतप्रथमबचनामृतसंपूर्णम् १॥

अब दूसरो वचनामृत श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति कहतहैं जो वैष्णव कों प्राणीमात्रऊपरदयारखनी जो कुंजरते चेंटीपर्यंत सबमें एकहीजीव जाननों छोटे बड़े सबजीवप्रभुकेहैं अंतर्जामीसबमें रहीहै और प्रतिबिंबन्यारेन्यारे दीसतहैं यहभगवदीय कुंजानि हिंसाते अत्यंतदूर पत रहनो आपनतें सीतउष्णसबमें विचारनरहनो औरकाहूको हृदय कल्पावनोनहीं वचन मन देहतें सबको भलोकरनों आप वचन मन देहतें न्यारोहै सुखदुःखतें दूरिहै तातें वैष्णव होय कें प्राणीमात्रऊपर दयारखे यहश्रीगोकुलनाथजी वैष्णवनकों आज्ञाकीयेहै २ इतिश्रीदूसरा प्रसंग सम्पूर्णम् ॥ २॥

अबतीसरो वचनामृत श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टसेंकहतहैं जो वैष्णवकों सदाप्रसन्न रहनों औरदुखसुख बराबर जाननों सुखतें हर्षहोय और वैष्णवतें दैन्य होय प्रीतिराखे और अहर्निस श्रीजी को ध्यानराखें इत्यादिके सुमार्गमें गुरुसेवा वैष्णव सेवामें नठामें और अपने शरीभोगाध्यान नुठावें औरलौकिक वैदिक आवश्यकहोयतो संकोचसहितप्रभुनकों दिखाय आग्यालें उठावें और वैष्णवके पासमान

छोड़िकें जाय और निसंक होयकें भगवद स्मरण करें जहां भगवद वार्तामें संकोचहोय तहां भगवदधर्मनवैवे संदेहरहे तहां संदेहनिवृत्तिहोय तहांप्रीतिवढ़े तहां ज्ञाननहोय औरअपनी देह अनित्यकरिजानें तवमगनहोय औरकाहूकोवुरो नहोय दुखमें धीरज धरें ताको उत्तम वैष्णवजानें यह तीसरो लक्षण है ३ इतिश्रीतीसरोवचनामृतसंपूर्णम् ॥३॥

अवश्रीगोकुलनाथजीवैष्णवनकों चौथो लक्षण कहतहैं जो भगवदीय कौं क्रोधनकरनों ताको कारण यहहै जोक्रोधहैसो चांडालकोस्वरूप है सोजहांक्रोधहोय तहां भगवद धर्म तथाभगवाननरहैं क्रोधहोत है तवभगवद भावजातरहे औरक्रोधहैसो अग्निरूपहै भगवद धर्मको नासकरतहै जाकोंक्रोधवढ़तहोय तो क्रोधावेससे असुद्धरहै जैसें चांडाल के स्पर्शतें सचोलस्नान करनोंपड़ै ऐसोदुराचार्यहै सोंक्रोधतेजीवको सचोलस्नानकरनोंपड़ै नाहींतो हाथपांवतो धोवे तथा सोल्है कुरलाकरे चरणामृतलेयमनमें सांतहोय तवक्रोधावेसतेंछूटै तातेंभगवदधर्मभगवद स्मरण पवित्र होय के करें और क्रोधावेसमें देहछूटैतो नर्कमें पड़ै तथा अधोगति होय क्यों

तामसानांअधोगतिः

और विना कारण भगवद सेवा संवंधविना क्रोधकरै तो स्वानि योनि पावै और लोभतें काहूको द्रव्य चुरावे और पछेते क्रोध करत है सो सर्पयोनि कोंपावत हैं और कोई वैष्णवको ईर्षा करके भगवद सेवा

भगवद् धर्म कीर्तन आदि में प्रतिबंध करिकें छुड़ावै सो वह कुंभी पाक नरकको कीड़ा साठ हज़ार वर्ष तांई होयहै पाछैं सूकर कूकर सर्प इत्यादिक योनि कूं पावैहैं तातें भगवद् धर्म संबंधी वार्ता साधारणह होय तासों विघ्न करनों और जो क्रोध ईर्षाकरि कें काहूके घरमें अग्नि लगावतहैं सो तीनों तापकरिकैं नर्क में पड़तहैं और ईर्षा तथा क्रोधतें काहू को विष देतहैं अथवा जलमें डुबावतहैं तथा शस्त्र सें अपघातकरत हैं सो नर्क भोगकें सर्पयोनि कूं पावतहैं तिनसो दशगुणो प्रायश्चितकरत हैं तबशुद्धहोतहैं क्रोध सगरे धर्मन में बाधक महा दुर्बुद्धी होय कें अज्ञान तें करत हैं तातें मनलगाय कें क्रोधको निवारन करनों सो भगवद् इच्छा तें दूरि करि और क्रोधकरिकें भीतर तें गुरुकी निंदा तथा कठिन वचन बोलें हैं सो मूसकहोय पाछैं प्रेतयोनि पावतहैं और भगवद् वार्ता बिना माता पिता सों क्रोध करत हैं सो दारिद्री होत है और वैस्नव सों क्रोधकरतहैं । तिनको सगरो सुकृत धर्मको नास होतहैं या प्रकार श्री गोकुलनाथजी आप कल्याणभट्टसों आज्ञा कियेहैं सो क्रोध को महादोस है सो कहितें पार न आवैं सो यासों सावधान हैं ४ इतिश्री चतुर्थवचनामृत संपूर्णम् ॥ ४ ॥

अब वैस्नवनको पांचमो लक्षण श्री गोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति कहत हैं जो वैस्नव होय कें एक श्रीभगवानकोही आश्रयजानें और भग-

× सर्पयोनिकूंपावैहैं तापाछैं

वह सेवाविषें सकागृह चितराखें परम फल रूपजानें और लौकिक वैदिक में मनकी चंचलता नराखें और श्रीजी को स्वरूप श्रीभगवतमें तथापुष्टी मार्गीय ग्रंथनमें कह्योहै सो तिनकोदर्शनकरि ध्यानहृदय में राखें जैसे भगवद्नाम स्मरण करें तथाजपकरें तबभगवद् कटाक्ष अंगवस्त्र आभरण में अपनों मनलगायकें चिंतमन करें, और भगवद्नामविना जोछिन जाय तो हृदयमें उसास लेकें तापकरें और अपरसमें स्नानकरि चरणामृत तथा श्रीजमुनाजीकीरज सुखमें मेलि दोऊनेत्रन सों लगाय माथे धरि हृदय सों लगाय अलौकिकदृष्टि होय तब भगवद्धर्ममाथें विराजे तबहृदय सुद्धहोय तबमाथे विराजे औरभगवद मंदिर में जायतो छोटी मोटी सेवा अपनों भाग्यमानिकें करें पात्रमांजें मंगलभोगधरि सेज्याफेरिकें समारें मंगल आरती करि तिथिवार उत्सवदेखि अभ्यंगकरावें और सिंगार जैसो स्वरूप पुष्टिमार्ग अनुसारतिथि ऋतुके अनुसारकरें और सेवासिंगार विषें चित्तको उद्वेग संकल्प विकल्प नकरें और अपनेमनमें अपराधको भयराखें अपनों भाग्य महा प्रभूजीकी कृपातें जानिकें करें मंगला राजभोग उत्थापनसेन कराय संकल्पता वस्तुसामग्रीकी चोकसी राखे पाछें रात्रमें वैस्नवन सों मिलिकेंभगवद्वार्ता कीर्तन आवश्य करनों और कोई वैस्नव मिलें सतन्मार्गीय ग्रंथनकी टीका सतन्मार्गीयन वैस्नवन में जायकें सुनें जेसे सेवामें आलस्यन करें जे

तथा अनेकान लीला हैं तिनको चिंतमन करें

सेवैस्नव मिलाप में नकरैं दोऊ होंय तवभक्ति वृढे भगवद सेवा नवनै तौ वैस्नव संग न छोडे सो वैस्नव संग छोडै तो दैन्यता होय याप्रकार श्री गोकुलनाथजी वैस्नवन सों आज्ञा किये हैं ॥५॥ इति श्री गोकुलनाथजी के पंचम वचनामृत संपूर्णम् ॥५॥

अब श्री गोकुलनाथजी छठो लक्षण कहत हैं जो वैस्नव सेवा भगवद् स्मरण भगवद धर्म इन में पाखंड रति न राखै और काहू के दिखायवे के अर्थ पूजा अर्थ प्रतिष्ठा अर्थ उद्धारार्थ नकरैं और अपनो धर्म सहज जानें जैसे ब्राम्हण गायत्री जपे सो लाभ संतोष सूं सेवा करैं एक कालो द्विकालो वा और विवेक विना पूजा सेवा करै तो नर्क में पडै और पाखंडी की पूजा सेवा प्रभु अंगीकार नकरैं याप्रकार सों श्री गोकुलनाथजी कल्याण भट्ट प्रति कहे हैं ६ इति श्री छठो वचनामृत सम्पूर्णम् ॥६॥

अब श्री गोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति वैस्नवन सों सप्तमो वचनामृत कहत हैं जो वैस्नव होय कें काहू को अपराध न देखें अथवा सुनें नहीं जदपि कानन सों सुनें और आँखिन सों देखे परंतु मन में रंच कहू न लावें यह जानें जो मे मायावादरूपी अविद्या में परू सो मोको दोष दीसत हैं मन में रंच कहू देखे नहीं उत्तमोत्तम देखै नाहीं मध्यम देखें के कहे दुष्ट झूंठे सांचे लगाय ईर्षा करै कोई सों खोटो काम करै अपराध करै तो वाको भूलि जाय वाको प्रसन्न करि संकोच छुडावनो भ·

लो कार्यहोय सो गुणकों प्रकाशकरैं याप्रकार चलै तो प्रभु कृपाकरिकैं अपनी भक्तको दानकरैं सोयाप्रकार श्रीगोकुलनाथजी पुष्टिमार्गीसिद्धांत कहे हैं ७ इतिश्रीसप्तम वचनामृत संपूर्णम् ॥ ७ ॥

अब श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति आठमों लक्षणकहतहैं जो वैष्णवहोयसो सांचो होय और लौकिकतें अलौकिकमें कपटन राखै और भगवदीय सों मिथ्यानबोलैं उनकी टहल सेवाकरैं उनसों भगवद्चर्चाकरैं उनके हृदयको भावतथा पुष्टिमार्गको सिद्धांत अपनें हृदे मेंधारण करैं और वारं वार अपनें मनमें विचारें भगवद्वार्ता हेतसमझें सो भगवदीयकों दीनहोयरहनों और भगवदीयके आगें अपनी बड़ाई करनों और उनकी आज्ञा उलंघन करनो उन सों सनेह बहुतराखनो श्रीठाकुरजीकी लीला वार्ताकों प्रकाशन जानतहोय तौ दैन्य होयकै भगवदीयसों पूछनों अपनी योग्यतान जतावनी उनभगवदीयन के आगें भगवद्वार्ता गोष्टी करनी याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति आज्ञा कीये हैं ८ इतिअष्टमवचनामृत संपूर्णम ॥ ८ ॥

अब श्रीगोकुल नाथजी औरहु आज्ञाकरतहैं जोकोऊ निंदादुर्वचनकहै ताको उत्तर नदेनो सब सहनों अपनें मनमें क्रोधजानि उनसों क्रोधन करनों अपनें मनमें खेदन करनों और उन सों बहुत विरोधहोय तौ नेक दूरि रहनों उनकीकृत्य

देखिकें दोषबुद्ध रंचकहू नकरनों उनसों जैसी कृपा को ब्योहार राखनो उनको उपकार अपने सो बनि आवै सो करनों उनकी निंदा न करनी याप्रकार वैष्णवन के अपराध ते डरपतरहनो ऐसें डरपतरहे ताको सर्व कार्य सिद्धहोय प्रभु कृपाकरि कें हृदेमें पधारें निंदासहनी यह वैष्णवन कौं सर्वोपर परम धर्म है याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति आज्ञाकी येहैं ९ इतिश्री नवम वचनामृत संपूर्णम् शुभम् ॥ ९ ॥

अबश्री गोकुलनाथजी वैष्णवनकों दसमों लक्षण कहतहैं जोश्रीठाकुर जीकीसेवा काहू के भरोसे न राखै अपने सेव्य स्वरूपकी सेवा आपुहीकरनीऔर उत्सवादि समय अनुसार अपनें वितसमान वस्त्राभूषण भांतिभांति के मनोरथ करिसामग्री करनी श्रीठाकुरजीके नित्य नौतन उत्सवजानि प्रसन्नरहनों अमंगल उदास कबहूंन रहनों और सामग्री जाउत्सवमें अपनी घरकी कहीहै सोरीति प्रमाण यथाशक्ति करनों और जोद्रव्य होयतो श्रीकृष्णके अर्थलगावनों कृपनतानाहीं करनों और भगवद सेवा करिकें श्रीठाकुरजीते कछू मांगनों नहीं यारीति सों निसक काम होय श्रीठाकुरजीकीसेवाकरनी और जोवृद्ध होयरोगादि प्रतिबंध आय पडे तो आपुन सुंजाती वैष्णवपै सेवा करावनीऔर सुजाति वैष्णवनहोय तो मर्यादी वैष्णवकों कछु द्रव्यदेकें सेवा करावनी और जो मर्यादी वैष्णवन

होयतौ समर्पनीपै सेवाकरामनी और समर्पनी वैस्नव
गांवमें नहोयतौ नामाधारी वैस्नवसों पटवस्त्र पैली
हाथमें पहरायकें श्री ठाकुर जीकीसेवा करामनी·
साक्षात श्री ठाकुरजीकौ स्पर्शनकरामनौं और याके
हाथकी सखड़ी अनसखड़ी श्री ठाकुरजी आरोगें
परंतु आपुन कौ पड़ौ प्रतिबंध आयपड़े तो लेनोा
त बंधछूटे तब सकवृत तथा भेंटकाढे तबश्रीठाकु
रजीकौ स्पर्शकरनों और अन्य मार्गीयके यहां स्पर्श
सेवानकरावै नामधारीन मिलैतौ आपुई पटवस्त्रध
रैं श्रीठाकुरजी पोढेहीं आरोगें परंतु और सों सर्वथा
नाहीं करानौ जोशरीर सर्वथा नचलैतौ श्रीठाकुरजी
कौ गांमके वैस्नव तथा और गाम कौ वैस्नवहोय ति
नके घरपधारनो जोमनकरिकैं नकरै तो भगवत्सेवा
नहोय तातें मनलगायकें मानसी सेवाकरनी याप्र
कार सों पहिलें सेवा करीहोय ताही प्रकारसों सेवा
करनी और मानसीसेवाकोप्रकार यहहै जो अपनें
मनमें श्रीठाकुरजीको ध्यानकरिकैं श्रीठाकुरजी
श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी के बालकनसों सम
र्पण कियो होयतौ श्रीजी तथा सातों स्वरूप अ
पनेगुरू तथा अपने सेव्यस्वरूपहोय तिनकोनेम
पूर्वक अंतःकरणसोंनमस्कार करनों पाछें मन
हीं करिकें मंगलभोग धरि मंगला आरती करै पा
छें अभ्यंग स्नान अंगवस्त्र आभूषन रितुके अनुसा
र करावै याप्रकार राजभोगउत्थापन सेनपर्यंतकी
भावना करनी परंतुमनमें संतोषनराखैं यहजानें·

जो मोसों साक्षात् हस्तसों सेवा कबकरावेंगे सोभगवद्सेवामें एकादशइंद्रियन को वियोगहोतहैयह तापकरै याप्रकारसोंरहै सोउत्तम वैष्णव है याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रतिआज्ञा कियेहैं १० इतिश्रीदसमवचनामृतसंपूर्णम् ॥

अब श्रीगोकुलनाथजीग्यारहमोंलक्षणकहतहैं जोवैष्णवहोयतो प्राणीमात्रऊपरदयाकरै और वैष्णवअपनेघरआवैतो प्रसन्नहोयरहेऔरकहैजो वैष्णवद्वाराप्रभूपधारेहैं यहजानितेललगाय तातेपानीसोंनहवाय सुंदर रितुअनुसार वस्त्रपहिराय नानाप्रकारके महाप्रसाद लिवावै जोसामर्थ्यहोय तासमय के लायक सनमानकरि प्रसंनकरनों और काहूको रिणकादिके नकरणों रिण और हत्या बराबरि हैं काहूको दुखदे कार्य न करणों यह भावसों वैष्णव को रहनों और अन्यमार्गके श्रीठाकुरकी सेवान करनी और बिनामर्यादीके ठाकुर अपने ठाकुरजीपासनबैठामने और अपनी श्रीठाकुरकीसामग्री बिनामर्यादी को नदेनी प्रसादीहोयतो बिनामर्यादीआगेभोगनधरनों सो प्रसाद मर्यादीनलेय लीलाको भावअन्यमार्गी तथा पात्र बिन नकहनों पुष्टिमार्गमें अनन्यहोयतासों मिलिकेनिवेदनको तथालीलाको भावस्मरणकरनों और अपने गुरूनेंमंत्रदियोहोय अष्टाक्षर पंचाक्षर तिनको प्रकाश जहांतहां पात्र बिनानकरनों अपनें श्रीठाकुरजीकी सेवाजहांतांई बनै तहांतां

ई और के घरनपधरावनी अपनें घर सेवाको सौकर्य सामर्थ्यन होयतो औरकेघर दोयघडीकरैं परंतु रंचकहू नेम पूर्वक करी चहिये तैसेंई भगवदीयको संगनेम पूर्वक करनो याप्रकारश्रीगोकुलनाथजी कल्याण भट्टप्रति पुष्टी मार्गीय सिद्धांतकहेहैं इतिश्रीगोकुलनाथजीकृतएकादशमोवचनामृत संपूर्णम ॥ ११॥

अवश्रीगोकुलनाथजीद्वादसमो वचनामृत कहतहैं जोवैस्नव अपने सेव्य स्वरूपको साक्षात पुरुषोतमजानिकें सेवाकरैं और अन्यमार्गीयके ठाकुरको अपनेश्रीठाकुरजीके बराबर नजानें औरहस्ताक्षर वस्त्रसें बाचिच सेवामें अन्यभावनजानें साक्षातजानि अपराधको भयराखें भगवदसेवागृहस्थधर्म सेवा अर्थजानैं अपनें सुख अर्थनजानें और अपनीदेह अनित्यजानें श्रीठाकुरजीकीदेह अनित्यजाने श्रीठाकुरजीकीदेह तथा भगवदीयके देह अनित्यकारि जानें नहीं इनमें लौकिकसुखतुच्छ जानें भगवदसेवामेंप्रीति राखें तिनसों प्रीति विशेषराखें सो यह लौकिक वैदिकवस्तुनजानें पराईवस्तु पराईसत्ताहोयतामेंलोभराखे कछुप्राप्त भयेतें सुखनमानें कछुहानिभयेतें दुःखनमाने गृहस्थधर्मके सास्त्र काहू सों सुनिकें लौकिकमेंलीन होयजानों पुष्टीमार्गीयसंबधी सास्त्रके वचन हैं और अवसास्त्रपुष्टिमार्गतें अंतरायवुबारोहै यह निश्चयजानों औरभगवदकार्यगुरुकार्यवैस्नवकार्यमें म

नराखें जैसें जलतें कमल न्यारो है तैसें लौकिकवैदिक तें न्यारो रहे और श्रीभागवत तथा श्रीआचार्यजीके ग्रंथन को भगवद्स्वरूप जानें और श्रीसर्वोत्तमको पाठ तथा जप मनलगायकेकरनों ऐसे पुष्टिमार्गीय वैस्नवकी गायत्री है ताते सगरे प्रतिबंध दूरिकरि पुष्टि मार्गकोफलपावे और यमुनाष्टक आदि पाठ नित्यकरनों और श्रीजी सर्वोत्तमको पाठ जप नेम पूर्वक करनों ग्रंथके श्लोक कोभाव विचारनों और सदापवित्र रहनों कुटिलमनुष्यमें छुदवेकी ग्लानि राखें वैस्नव के वस्त्रमें वहुत ग्लानि नराखें अलौकिक देह सों लग्यो रहे और काहूके दिखायवेकेलिये वड़ो अपरस नराखें और जहां तहां विचारें विना खान पान न करनों याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कहे हैं १२ इति श्रीद्वादसमों वचनामृत संपूर्णम् ॥

अव श्रीगोकुलनाथजी तेरमों लक्षण कहत हैं जो भगवदीय वैस्नव को काहूसों विरोध न राखनों और जहां क्रोध की वार्ता होय तहां ठाढ़ो न रहनों और रूसवनसों हित राखनो सो सर्वात्मभाव राखनों और लौकिक को वचन कियाहितकरनों उनकी बात झूठी होय अपने दुरायेतें खेद पावे सो न करनों और सांची कहेतें खेद पावे सो न करनों याही प्रकार विवेक विचार पूर्वक चलनों ताको भगवदीय कहिये और वैस्नवकी निंदा करें तो नरकमें पड़े तथा विचार है जो वैस्नव कुमार्ग चलै तो समुझावनो मनमें हू सकरि निंदा करै अथवा मार्गकी रीतिसों विपरीत चलें

ताकों वैस्नवन जाननों और अपने मार्गको वैस्नव होयतो और ठौरकीवातकी और ठौरके सिद्धांतको न करनों जदपिवड़ोपंडितहोय और समुझवार होय तोऊ वाको संगवड़ोदुखदाईहै और थोरोसमुझै परंतु पुष्टिमार्गमेंतत्परहोय ताको संगहितकारीहै सोवैस्नवकी निंदातें कोटिकोटिअपराधतें दुष्टहोय और वैस्नवहोयतो लौकिकवस्तुमेंतृस्ना नराखै और कामनतेंदु वेंहीहोय और तस्मातकेवलस्वार्थहोय भलो बुरो नसुनै केवलस्वार्थहोय प्रसन्न होय स्वारथनहोयतोनिंदाकरै और तस्मातें मनमें संकल्पविकल्पहोतहै तवअपनोस्वरूपअपनोधर्म भुलिजातहैं तवमन में अनेकप्रकारकेलोभरूपीतरंग उठतहैं सो लोभतें भलोवुरोकार्य समुझतनाहीं और विवेकग्यान सवजातरहैं तवझूठीसांचीवातवनायकैं अपनें कार्यमें तत्परहोत …… हैं द्रव्यतथावस्तु लेनमें डरपतनाहींहै और द्रव्यकी रक्षाकेअर्थ अनेकजतनकरतहैं तातेंवैस्नव को लोभतृस्नाकरनीउचितहै वैस्नको कालकोभयराखनों जोमोतेंकछु अपराधहोयगो तवश्रीठाकुरजी मतिकहूंअप्रसन्न होयजाय सो यहकालतोसगरेजगतको गृहतहै सो मोकूंकोलेजायगो तातें लौकिकवैदिकमेंआसक्तनहोय और करे विनानचलै तातेसहजमेंवनै सोकरै परंतुमनमें आसक्तनरहै यहमनमेंजानेजो अपनें धर्मविना सहायकरिवेवारो कोईनहीहै अपनो वैस्नवधर्मगयोतव सवगयो सोवैस्नवधर्म द

ढहोय तौ प्रभुसबमेंसहायकरैं औरधर्मगयोऔरकछु सिद्धभयो तौलौकिकचारिदिनमेंजातरहै औरपरलोकबिगड़ै तातें भगवद्धर्मकोमहातमहृदेमेंराखिकें केवलप्रभूनको आश्रयकरनो औरस्वारथनतेंधर्म जाय अथवा लौकिकविषयादिकसुखकेअर्थकरै तौधर्मजाय और श्रीठाकुरजीतें गुरुविषेअधिकप्रीतिराखनी यहजानें जोकछुभयोहै सोइनकेकृपासें भयोहै औरआगेहूइनकीकृपातेंहोयगो सोतोजोगेश्वरकेप्रसंगमें कह्योहै जोश्रीठाकुरजीमेंबड़ीप्रीतिहै औरगुरुविषें तथावैष्णवविषें दयानहींतौसबबराबरिहोतहै और वैष्णवकेतथागुरुकोसमाधानप्रभुसाक्षात्माहैं और वैष्णवसेंमिलिकेंअपनेंजन्मजन्मकेप्राणप्रियश्रीठाकुरजीतिनकोस्मरनकरैसोमनमेंयहमनोरथराखेजोश्रीठाकुरजीप्रसन्नहोयऔरलौकिककार्यअर्थनराखें याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति वैष्णवको सीक्षा दियेहैं १३॥ इतिश्रीगोकुलनाथजीकृततेरहबोललक्षणसंपूर्णम्॥

अबश्रीगोकुलनाथजी चौदहमोंलक्षणकहतहैं जोवैष्णवलौकिक वैदिक वा देहकार्यपैअनित्यकरिजाने और पुष्टिमार्गकोधर्मजानिकार्यमेंतत्पर रहै औरधर्म तथा लौकिककार्य तुच्छजानिऔर दुःखरूपजानें औरतीर्थको महातम सुनिकेमनको सेवा स्मरणतेंचलामनो नहींऔरतीर्थको फल तुच्छकरिजानें जोगंगाजीसरी केतीर्थजगत मेंनाहीं सोउ रुक्मिणीमनमेंनलाई औरवेदपुराण

सास्त्र श्रीभागवत गीता इनकेवचनसत्यकरिजानें परंतु अनेकप्रकारके अधिकारीहैं तिनके अर्थजाननौं और पुष्टीमार्गके वचन तथा धर्मके वचनमनमें राखनों और अनेकप्रकारकेफल तुच्छकरिजाननें और जयंतीआदिएकादशी सत्यकरिजाननौं परंतु फलकीकामनामनमेंनराखें और वड़ेकरे सोकरें तातेंसेवाकरेंसोमुख्यहै औरभगवद सेवा सुमिरन सर्वोपरिजानें और लौकिकविषेके अर्थकी कोनजानें और विषयसों पुत्रभगवदीयके अर्थकरें औरभगवदसेवाअर्थ स्त्रीमेंप्रीतिराखें आपनत्कर्षतानजनावें औरग्यानीहोयसुद्धभावसों प्रश्नकरें और भगवद्भावकीवातो अपनेमनमें दृढ़विश्वासकरि राखें तब भगवद्धर्मदेखेंतौ भगवद्धर्महृदेमें दृढ़करिकें रहैं याप्रकारसों श्रीगोकुलनाथजीआज्ञा कियेहैं १४॥ इतिश्रीचौदहमोंवचनामृतसंपूर्णम्॥

और श्रीगोकुलनाथजी पुष्टिमार्गकोसिद्धांतकहतहैं जोवैष्णवकोलौकिकमें आतुरतानराखनो लौकिककी आतुरतासेवाविसे उद्वेगहोय प्रभुप्रतिवंधकरैं सो कहैं ॥

उद्वेगोप्रतिवंधोवा भोगावास्यातुवाधकः

ऐसेंकहेहैं सोसेवामें लौकिकजीवको समाधान नकरें औरसेवामें गुरूकोकार्य तथा भगवदीयकोकार्यकरेंतौ चिंतानाहीं सोप्रभुअपनोकार्यजानि वेगही प्रसन्न होंय और मुखरतादोषवडोवहुतहै सोअपने मनमें विचार राखनों और कदाचितसुनें तौ अ

सुरावेसहोय और सेवासमेंकाहूसों संभासननकरनों और लौकिकवातहून करनों और सेवाविसें वहुनवोलेनाहीं और काहूकी झूंठी सांची कहनों नाहीं श्रीठाकुरजीकीटहलप्रीति सोंकरि प्रभूनकोउपगारमानिकें सोप्रभूननें कृपाकरिकें टहल करवाईहे और सेवा करिकें कछूलौकिकवैदिकमें वासना न राखनी आपनो मुख्यवैस्नवजानिसेवाकरै और वैस्नवहोयकें कछुदुःखमेंव्यास नहोनो और श्रीठाकुरजीकेवस्त्र आभरन सामग्री स्वरूपात्मकजानें ताते प्रभूसंबंधीहोयतो आपनोंलौकिकनजानें औरप्रभूनकोनयेवस्त्रकराय और प्रसादीसों अपनों कार्यचलावै और आपविनाप्रसादी पहरै तो वहिरमुखताहोय और चिंता कष्टकाहूवातको अपनेमन में नलावै और आनैं भोगनिवृत्त आवेसो सुखमें प्रभूनकोभूलिजायहे ताते सुखते दुःखभलो जो प्रभूनको स्मरणतौहोय सो तातें आपकोदर्शनहोय औरपुष्टिमार्गीय पंचाक्षरमंत्र को जपकरनों और भगवद्भावकेभूलेतें असुरावेश होयहे और कालअवधिकोक्षयजातहे और श्री ठाकुरजीकीवाललीला किशोर लीला और व्रजसंबंधीलीला इनकोगानसुनें तो श्रीठाकुरजीवेगहीप्रसन्नहोय और भगवदीय वैस्नवकें आगेलीला को गानकरनों और वाहिर अपनें धर्मको प्रकाशकरैनहीं औरभगवदीयको सेवास्मरणतथाभगवद्धर्मवढायवेकोउ

पायकरनों औरकाम क्रोध मद मत्सरता लौकिकआवेस सर्वथा दूरिकरनों आपनेपासतथा और वैस्नवके पास लौकिकआवेतो भगवदधर्म में मनलगाय कें सिक्षाकरनों और नमानेंतोकछू बोलनों नहीं और वासों वहुतप्रीतिनकरनों और भगवदीयके मिलिवेको उपायकरनों उनकीटहलकरिप्रसन्नकरि धर्मकरनों सोविस्वासकरिपूछनों और जोकछुभगवदधर्मनवनिआवैतो तापक्लेश न करनों और भगवदीयकों तथा अपनेगुरूकों घरलायकें प्रसन्नकरनों औरभगवदीयको लौकिकवार्तानकरनों जो यहकालपरम दुर्लभहे सोयहजानिकेपुष्टिमार्गको प्रकारपूछनों और भगवदीय देसांतरतें आयोहोयतो उनसों मिलिनों जो भगवदीयकेहृदेमें प्रभू विराजतहें सोतिनकेमिलतेहृदयपवित्रहोतहे और हृदेमें विराजेहें सोकृपाकरिकेंसर्वथापधारेंगे यहभावजाननों याप्रकारश्रीगोकुलनाथजी वैस्नवनको सिक्षाकियेहें ॥१५॥ इतिश्रीगोकुलनाथजीकृत पंद्रहमों वचनामृत संपूर्णम ॥

अब औरहू श्रीगोकुलनाथजी आज्ञाकरतहें जोवैस्नव देसकेंपरदेसकूंजाय और तहांश्रीठाकुरजी विराजेहोयतौंसुहानमृहोय सोजायकेंदर्शनकरें तापाछें खानपानकरें औरजहां अन्यमार्गीयहोयतो तहांसर्वथानजानों और जहांश्रीपुष्टिपुरुषोत्तमविराजेहोय और श्रीवल्लभकुल विराजेंतहांखालीहाथनजानों और नित्यनवनिआवेतोतव

तहांचलायकेजाय और श्रीवल्लभकुलविराजेहोंयतो

जायतव अथवा विदाहोयतव यथा शक्तिफलफूल पहुंचावनो और भेटकरनो और श्रीनाथजीकेदर्शनमें आलस्यनकरनो और प्रभून केदर्शन में आलस्यनकरनो और आलस्यकरै तो अज्ञानबढै और प्रभूनकीसेवाकरतहोय और दर्शनहोयचुकैं तौं अपराधनहीं दर्शनज्ञानहोय और ज्ञानहृदेमेंभयेतेंभगवदस्वरूपहृदेमें आरूढहोय औरअज्ञानतेंविषयादिशक्ति होय और जपकरैसों काहूसोंजतावेनहीं जपभावहै सोअत्यंतगोप्यहै और सास्त्रमेंकहैं हैं जो जपश्रेसेकरनोजोंअष्टाक्षर रंचकहूखुलैनाही याभावभीतरअनुभवकरतहीं जपकरनो और गोमुखीकीमालाऊपर काढनोनहीं और मालाभीतर उरझिजायतो ऊपरके मनिका निकासिके सुरझायकेधरै सोफिरनउरझै और मारणाका १०८ तिनसों जपकरै और सुमेरकोउलंघन नकरैं सुमेरकोउलंघन करैं तौ लीलातेंबाहिरपरै जपकोफलतिरोधानहोय और गोमुखी उठायकें जपकरनो और गोमुखी हैसो अलौकिकहै और जपमेंबोलनो नहीं देह मन कों चंचलनकरनो नेत्रनेंमूंदेरहै सोलौकिकई हृदय में नजाय जपको सेवाको साधनलौकिक क्रियानजानैं कदाचितलौकिकजानैं तौबाकों प्रभुजपनकरामैं और प्रतिबंधहोय तातें सेवाजपको महातम भूलेनाहीं महातमभूलैंतो साधारनजानें तबआलस्य होय आलस्यतें अज्ञानहोयअज्ञानतें दुर्बुद्धि संसारी होय संसार सक्ततें श्रीठाकु

जीतें वहिर्मुखहोय यह कहेजो सेवा दर्शन और जप पाठतें कहा होयगो और लौकिकविनानिर्वाह कैसें होयगो और वैस्नव मिलेंतो पाखंडकारिकें कहै जोसेवा दर्शनमें कहाहै और मनलगेगो· तबकार्यहोयगो सोवैतो योहीं पचिमरतहैं सोयाप्रकारसिद्धांतकरि लौकिकमें तत्परहोय और मनहै सो भगवद् सेवा कीर्तन वार्ता करनेतें लगेगो परंतु जीवकी उलटीगतिहै तातें भगवद्धर्म में मन लगतनाहीं सो याहीप्रकारदुष्टसिद्धांततें श्रीठाकुरजीअप्रसन्नहोतहैं और भगवदको ऐसें साधारनजानें अलौकिकनजानें और यहकहैंजोमेरी· अलौकिकदेह तासों श्रीप्रभूकृपाकरिकें अलौकिक सेवा करायेहैं और लौकिकजीवतें भगवदनाम निकसतहै सोवडीश्रीमहाप्रभूजीकीकृपातेंप्राप्तभयो है और शरीरतोजाति प्रसिद्धहै और प्रभूके स्वरूपकोदर्शनसेवा स्मरण जप पाठ तोपरमदुर्लभहै· सोतबयह महातमजानें तबप्रीतिहोय याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति वैस्नवकों सिक्षादियेहैं ॥१६॥ इति श्रीषोडसमो वचनामृ·सं·

अब श्रीगोकुलनाथजी सप्तदसमों वचनामृतकहतहैं सो वैस्नवहोय सोयाप्रकार पुष्टिमार्गकोसर्वोपरिजानें तबपुष्टिमार्गीय भगवदीयके कहेको विश्वासहोय तबफलसिद्धहोय औरभगवदीय कों लौकिकनजानें जोभगवदीयकेहृदेमें प्रभूविराजेहैं औरभगवदीय की देह इंद्रीमान अलौकिक कहे हैं·

सोउनकेसंगतें अलौकिकहोयसो अलौकिककैसेजा
निये जोदुख में विवेकधैर्य आश्रय दृढहोय और सु
ख में अभिमाननहोय और भगवतधर्म में प्रीतिहोय
और काहूते कपट छलनिंदा काहूको बुरो नचीतै·
औरचोरीतथा विषय लौकिकनकरै जोकोईसोजो
गपियके संगहोयजायतो बहुतखेदपावे ऐसेभग
वदीयको संगसदा करनों जैसेंश्रीठाकुरजीकेदर्शन
तेंपवित्रहोय तैसें भगवदीयकेदर्शन तेंपवित्रहोय·
भगवदीयकोसंगहोतही मनमें आनंद तथा भगव
द धर्मकी स्फुर्तिहोय और भगवदीयकी सेवातें श्री
ठाकुरजीबहुतप्रसन्नहोय औरभगवदीयके संगतें
असमर्पित अन्याश्रयछूटे असमर्पितलियेतें अ
सुरावेशहोतहै अन्याश्रयतें वैस्नव धर्मपतिहत·
होतहै तथा व्यभिचारिणीहोयजाकोभृष्टजाननो·
और पुष्टिमार्ग में अंगीकारनहोय अनेकमायाकेदु:
खपावें औरवैस्नवके अर्थ उद्यम करनों औरमन·
में यहविचारनों जोवैस्नवसेवागुरु सेवामें अंगीकार
होय यातें ब्योहारसुफलपावें सोयहभावराखेंतो·
लौकिकब्योहारको बाधकनाहीं होये और कबहूं·
नकौं अपने कुटंबकौं भरापोषन चल्योजाय और
भगवद धर्मबढे और ब्योहारहू अलौकिककोनामलो
गनकों बताय सगरोदिन पच्यो नकरै और राजभोग
पाछेउत्थापनकेभीतर इतने नेमकरै सो प्रभु इत
नेहीं आवन हारहोयतो प्राप्तहोय सोसेवादर्शन
नित्यनेमसोकरै और बहुतद्रव्यकमावेतो अपनेघर·

श्रीठाकुरजी तथा गुरून कों पधरावें और वस्त्र आभूषनभेटकों और अलौकिकमनोरथन में चितरावें और नानाप्रकारकी सामग्री करके श्रीठाकुरजी को अरोगावें तापाछें वैस्नव को महाप्रसादलिवावें और द्रव्यकोसंकोच रहै तब श्रीठाकुरजीके पात्र तथा आभरन वस्त्र इनमें अपनी संतान राखे या अपराधतें डरपतरहै औरधीरज राखैतौ नजाने राजा कुटंवीको भयराखि कें अपने गुरु कौं घर पधरायकें सुखहोयजाय जो श्री ठाकुरजीके स्नवनको दुःखसंग तदुरापत रहनो और श्रीठाकुरजी को भाव पहले होयतो वैस्नव पठावें नही और नानाप्रकार की सामिग्री भोगधरि पाछें वैस्नवन कौं महाप्रसाद लिवावें तामें द्रव्यकी सुफलताहोय तातें कोई वातको दुःखनपावें और छिनछिन में प्रभूनको नाम स्मरणाकरणों और मनमें दासभाव राखनों अहंकारादिकमन में न राखनों याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति कहे हें ॥ १७ ॥ इतिश्री सप्तदशमो वचनांमृत संपूर्णम् ॥

अब श्रीगोकुलनाथजी अठारमो वचनामृत कहत हैं जो जहां अन्यमार्ग की निंदा तथा श्रीवल्लभ कुलकी निंदा अपने पुष्टिमार्ग की निंदा वैस्नवकी तथा धर्म की निंदा होय ऐसे दुष्टजीव के पास कवहूं न वैठिये और अवस्य कारन पायकें मिलापहोयतो अपनेपुष्टिमार्ग

की चर्चा वार्ता करनी नहीं और कोऊ वतावे और चलावे तो वाहि गोप्यकरि राखे सो तहां प्रकाश नकरें और प्रकास करें तो अपराधपड़े सो काननमें निंदासुनेतें यहसास्त्र में कहेहें जोअपने प्रभूकी निंदासुने अथवा करे तो ताकी जीभ काटिलीजे और न वस्यायतो तहांतेंभाजिजानों परंतु कानन सों सुनें नहीं और हरिदासने जेमल्लको सीक्षादीनी सो तहांताईं वनें तहांताईं ऐसे वहिसुखसों मिलापन करनों जो वहिर्मुख होयसो यतन्मार्ग की निंदाकरें और आछोब्राह्मण पंडित हे वा अच्छो सचीहे और एतन्मार्गको विरोधी हे तो वह वहिर्मुखहें और जो हीनज्ञान जातहे और एतन्मार्गमें अत्यंतश्रद्धाहे ताकों सुजीव जानवो सो दूसरे जन्ममें सरनि आवेगो सो सरनि आयकें मार्गको विरोधीहोय तो जानिये जो जीव पुष्टिमार्ग में तो आयो परंतुपुष्टीमार्गको फल नाहीं होय और सरनिप्रतापतें मुक्तिमार्गकों तो पावेगो और संसारीहे और एतन्मार्गमें प्रीतिहे और साधारनहें सो जिनसों लौकिक वैदिक कार्यार्थ मिलनों और एतन्मार्गमें सिद्धके अर्थ सर्वथा त्याग करनों याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रतिकहे हैं॥

इतिश्रीअष्टादशमो लक्षणकह्यो सो संपूर्ण १८

अब आगे श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति उनीसमो लक्षण कहतहें जो वैष्णवहो

यतौ भगवदीय आवैं तौ संसारी संग्राय दूरिकरि पुष्टिमार्गीय भगवद् धर्म वढावे तातें और वैष्णवकौ मनवढे सो निरोधलक्षण में कहतहै अज्ञानादथवाज्ञानात्कृतमात्मनिवेदनम् सो अज्ञान करिके अथवा ज्ञान करिकें शरणहीं आवै सो शरण आयेतें सर्वकार्य सिद्धहोय और कहै जो निवेदनंतु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः सो सरन आये पाछें वैष्णवकौ कैसें ज्ञानन होय तापाछें तापक्लेससमझै और प्रथमकठिनपाय तें शरण आवै तामें जीवकौ वडोसंदेहजाय सो क्रमक्रमसों सेवासुमिरन तथा लीलाकी भावनाताप सनेह वढावै और अनन्य भगवदीयकौं अपनों परमधर्म जानें और पुष्टिमार्गमें विपरीत धर्म वतावें ताकौ अपनों सत्रूजाननों तातें प्रेमदिसावारेकौ संगकरनों और सत संगविना याकालमें दुःसंगवहुतमिलतहैं ताकरिकें याके भगवद्धर्म कौं नासहोयहै सो याकालविषै अनेक प्रकारे प्रतिवंध आयके पडतहैं तासों सत्संग होयतौ भगवद् धर्म वढ़े नहींतौ अन्याश्रयजाय॰ सो याप्रकारसों श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा किये हैं ॥२६॥ इतिश्रीछब्बीसमो वचनामृत संपूर्णम् ॥

अव श्रीगोकुलनाथजी और हू आज्ञाकरत हैं जोभगवदीयकौमनलगायकें भगवद्सेवा करनी और फेरि राजभोगपाछें एकांतमें दोय चार घड़ी में जैसो सौकर्य होय तितनें मानसी सेवा

करनी और नख पर्यंत सबरे शृंगार कोध्यान करनो सो न्हायके मंदिर में जायके मानसी रीति सो रीति अनुसार शृंगार करनो तापाछें भावना सहित सुंदर सामग्री करि आरोगावनो सो राजभोगपर्यंत सबभावनाकरैं तापाछें महाप्रसाद लेय और वैसब आयोहोयतो प्रथमजनको महाप्रसादलिवावें तापाछें मानसीकरि आपमहाप्रसाद लेय याभाव से उत्थापन से सैन पर्यंत भावना करनी और पाछें गुंजा भावनाकरनी सोअत्यंत दुर्लभहै और आपनो मनलौकिक आसक्तिहोयसो नकरनो और यहकहेंजो श्रीमहाप्रभुजी आपनो दासजानिकें कृपाकरेंगें याप्रकारभावनाकरनी तातें भावनामें प्रथम प्रभुनके शृंगार में मनलगावै और जन्मजन्म की अविद्याकरिकें भगवद स्वरूप में मनलगावत नाहीं सोशृंगार मैंतो अद्भुतछवि देखिकें मनको शृंगारतो होय तबकल्याणभट्टनें प्रश्नकियो जो महाराज शृंगार को वर्णन करिये सो अबश्रीगोकुलनाथजी शृंगार को वरणन करतहैं जो प्रथमतो श्रीठाकुरजीके चरणारविंदमें मनलगावैं सो परम कोमल सुकुमार तिनमें सोरहचिन्हहैं और प्रथम वडकेपत्र आरक्तहोय तैसें वामें चरण दीक्षण मर्याद भक्त पुष्टिदीक्षणः स्वकृतमर्यादाचतथाश्रुतः तिनमें दसनखन की कांति चंद्रमा तापहारी तिनमें नूपुरआदि

नखभूषन जड़ाउं ताके ऊपर जे हरि पायल झांझन कटिसाकरी ताकों सुनि स्याम मनोहर ताके ऊपर गुल्फ सुंदर तापै घुंघुरू तापर जंघ कदलीचर्मवत और कटि केहरवत पतरी तापर किंकिणी तथा पीतांबर धोती स्यन और त्रिवली और हृदय विलास ताऊपर चौकी पदधुकधुकि चंपकली बंधी है और बैजंती माला मोतिनकी माला कदंबके कुसमन की माला· तापर कंठश्री माल कमलपद भुजमें बाजूबंद जड़ाऊ फोंदना स्यामवलय पोंहोंची कंकण हस्तफूल नखावली और ओहल तामें लाल मुरली तापर नगजड़ाऊ तामें चिबुक हीराके भूषण और अधर नीचे मंदहास्य मंदक्रांति कोटि विज्वला भरण वा भांति आगे और लमुख और नासामें बेसरिको मोती दोऊ नेत्रमें लावण्य कटाक्ष पांचप्रकारकी चितवनि मनहरन दोऊ भृकुटी कामधनुषवत सुंदर भालपर कुंकुमा तथा केसरि कस्तूरी को तिलक भौंह परमिस बिंदुका टेढ़ी घूंघरवारी अलकें दोऊ करननमें कुंडल मकराकृत कर्णफूल ऊपर कणिकालसत मस्तकपर मुकुट कुलह टिपारो ग्वालपगा भांति भांति के रंगन के जड़ाऊ मणिमाला गुंजा और चरणारविंदमें तुलसी गंध दोऊ और दामिनीवत और भक्त अनेक प्रकार की लीलाकों या प्रकार मनको स्वरूपाशक्ति को बारंबार विचा

रकरें तव सहजमें ध्यान हृदे मेंतेनटरे तवभावचनी लीला की भावनाहोय और नाना प्रकार [illegible] की सामग्री तथा कुंजके उत्सवादिक की सामग्री करें भावनाकरें याप्रकारमानसी करिदंडोतकरें तव प्रभु कृपा करिके हृदेमें पधारें तवलौकिकमेंतो देहछूटि अलौकिकमेंलगे तव रोमांचितहोयकें रुदनकरैं याप्रकारप्रेमकीदिसाहोय ताके भावकोपारनाही सोयाप्रकारश्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टसों आग्याकिये हैं ॥२०॥ इतिश्री वीसमोवचनामृतसंपूर्णम् ॥

अवश्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति इक्कीसमो वचनामृत कहतहैं जो वैस्नवसंजोग को स्मरणकरि आनंदनपावें कबहूंविरहकरि दीनभावको प्रेमहोय यहदैन्यताफलरूपहै दैन्यतातें संतोष तातें श्रीठाकुरजीअतिप्रसन्नहोय और जबनिसाधनहोय तवयहविचारिये ॥

चिंतनदुष्टोवचनेनापिदुष्टकायेन
विस्येभमपराधक तिधाविचार्यः१

याप्रकारआपनेको समाधानकरि हीनजानि मनमें प्रभु को दासभावराखें और अपनेस्वरूप को वारंवार विचारनो जोमें कौनगिनतीमें हूं और मेरी देह मलमूत्रसोंभरीहै और जितनीवस्तुसव खोटीकहीहैं तितनीमेरीदेहमें हैं सोऔरकोमें कहादेखों सोहाड मांस चर्म पूयक की भरीहै अनेक धारकरिकें मलवहतहैं ऐसोजो

ऐमेंतो अनेक प्रकारके कीड़ा हैं तिनमें हू

में महादुष्ट अज्ञान काम क्रोध मद मत्सरता लोभ भर्यो है और मोह रूपी जेवरी सों बंध्यो हूं अनेकन दुःख संसार में भोगत हूं सो ऐसो जो मैं ता मोकूं संसार में कहू ठिकानो नहीं है और श्रीआचार्यजी परम दयाल हैं सो मोंको पतित को शरणा लियो हैं सो मैं पुष्टिमार्गकी शरणागयो और मोकोतो नरक मेंहू ठिकानो नहीं हतो तातें श्रीआचार्यजी नें परम कृपा करिकें सरणा लेकें आपनों पूर्ण पुरुषोत्तम को संबंध करायोहै सो अब मोंकों यह कर्तव्य है सो दृढता करिकें श्रीपुरुषोत्तम के चरणारविंद में मन लगायके रहनो और कोटान कोट जुग भ्रमत महादुखित भयो हूं तातें संसार में तें सनकादिके प्रभुनके चरणारविंद में मन लगाऊं याप्रकार अपनें छिन छिन मे संभारे तव दीनता उत्पन्न होय और सब वस्तु में भगवदिच्छा जानै और उद्यम होय सो करै और जामें धर्म जाय सो न करनों और धर्म गयो सो सब गयो और सगरो स्वार्थ गयो और अपनी खरी मजूरी होय ताको श्रीठाकुरजी अंगीकार करै और यह अपने निश्चय करै जो श्रीठाकुरजीको नाम लेकें वस्तु लावै तो श्रीठाकुरजी को समर्पनी नहीं और तामें तें खानपान करै तो पातकी होय और श्रीठाकुरजीकी वस्तु अपनें खान पानकों लावै और भगवद धर्म बेचिकें लावैं तो सगरो भगवद धर्म नष्ट होइ जाय ऐसेंहीं कीर्तन करिकें देह निर्वाह चलावै और भगव

द धर्म को प्रगट करि अपनो निर्बाह चलावे और गृहको पोषन करै तो ताको कछु भगवद्धर्म फल न होय और संसार में कलेसरीति होय तो यामें कैसे चलै और काहूको बुरो न करै और लोग जानें जो केवल संसारी हैं तब भगवद्धर्म वढ़ै और जहां दश वैस्नव सत्मार्गीय होंय तहां भगवद धर्मकी चर्चा वार्ता करैं और वैस्नवके आगे अपनी वड़ाई तथा अपनो पुरुषार्थ प्रगट न करै जो मैंही कमात हूं ताते गृहस्थाश्रम चलत है जो प्रभु वढ़े हैं सो पालन पोसन करत हैं ज्ञानमार्ग में प्रवृत्त होय दृढ़ होय तब उद्यम होय याप्रकार पुष्टि मार्ग में चलै तो गृहस्थ को उद्धार होय सो संसार के उद्धारार्थ यह मार्ग है ताते त्यागिवेको होय तामें कहा करनो यह ज्ञानता है श्री भगवदीय ते होय सो याको दूसर प्रकार नाहीं है या प्रकार श्रीगोकुलनाथजी वैस्नवको आज्ञा किये हैं ॥२१॥ इति श्री एकविंशति मो वचनामृत संपूर्णम्॥

अब और हू श्री गोकुलनाथजी कल्याण भट प्रति आज्ञा करत हैं जो वैस्नवको मिथ्या भाखन सर्वथा नहीं करनो क्योंकि झूठि वरावरि पाप नहीं है जो राजा युधिष्ठिर ने इतनो कह्यो जो नरो वा कुंजरो वा सो अश्वत्थामा हत सो इतने ही पाप ते नर्कको दर्शन करनो पर्यो सो मन में वहुत दुख पायो सो तामें वहे

पाप कोतो पारनाहीं ताते मिथ्याभावन सर्वथा न
करनो ताते मिथ्या भावन को महापापहै और
श्रीठाकुरजीकी रसोई जाके ताके हाथसे न क
रावनी अपनेहाथसों पवित्रतासों करनी और
रसोईको कार्य दुःखरूपनजाननो जोमोकोश्रम·
होयगो कैसे करूं धुआनहींसह्योजातहै और
या पुष्टिमार्गमेंतो श्रीठाकुरजीकी रसोईकी टहल
परमउत्तमहै जहांताई अपनो शरीर चले तहां
ताई औरके हाथसो न करावै वा शृंगारतो करा
वै परंतु रसोई तो आपने हाथसोंई करै और
रसोईकी अपरस न्यारीराखें ताको उत्तम भगव
दीयकहिये और शरीर न चले ...... और अवस्थ
आय पडेतो और के हाथकरावै परंतु मनमेंता
पराखें और रसोई करके आपुही खायके न·
वैठिरहै क्योंकिदोसलागें तामें प्रथमवैस्नवको
लिवावै तापाछें आपुलेय और वैस्नवको मुख्य
करि दासभावराखें और दासतो ताको कहिये
जो वैस्नवकी झूंठि नखाय और मार्गकी तो यह
मर्यादाहै जो श्रीठाकुरजीकी तथा श्रीबलदेव
जीकी झूंठिन खाय इनविना औरकी खायतो
भ्रष्टहोय जाय यह धर्ममें संसयकारियतुहै औ
र सुख्यहूजनभक्तनको स्वरूपगायेहै सो गायकोप्र
थम महाप्रसादखिलावै और वैस्नवको खिला
वैं तापाछें यह सगरोमहाप्रसाद वैस्नव कीझू
ठिन नभई औरवैस्नव की सामर्थ्यन होयतो·

और आपनो कार्य जैसें तैसें चलावैतो गायकौ भाग्यतो आवश्यकाढे और यह रसोईकरेहै तव गाय पृथ्वी मनुष्य देवता पितर येसव आसा करतहैं सो जवगाय कोग्रासकाढे तव सगरे तृप्तहोय ताते गायको भाग्यआवस्य काढनो जो यह वैस्नव प्राणीमात्रकौं धर्महै और श्रीठाकुरजीकी सामग्री में आपनो मनचलावनोंनहीं और कदाचित् चलावै तौ महांपापीहोय और श्रीठाकुरजी आरोगेंनहीं और सिद्ध सामग्री काहूको दिखावनोंनहीं और श्रीठाकुरजीके लिये फल फूल सामिग्री करीहोयतौ तामें तें इस्त्री पुत्रादिकको काहूकौं दिखावैनहीं जोलौकिक प्रीतिसें काहूकौं देय और लेयतौ वहिर्मुखहोयजाय और याकौं स्वधर्मजाय और श्रीठाकुरजीअंगीकारनकरें ताते भगवद्सेवा हैसो गोप्यहै सोकाहू को जनावै नहीं जो सेवा प्रगट करि आपनी प्रतिष्ठावढावैतौ ताकौं पाखंडी कहिये सोताकीसेवामें कछु पुष्टिमार्गकौ फलनाहीं और पाखंडकरिवेवारे के हृदेमें लौकिक आवेस आवें सो लौकिक आवेशतें वहिर्मुखहोय और सेवामें प्रतिवंधपरै सोपाखंड कौमूलभयहै सो भयछुटैतव पाखंड नहोय और लौकिकके लिये जगतमें पाखंडकरतहैं सो वह पाखंडीहोयतथा अन्याश्रयी होयताकरिकें ज्ञान विवेकको फलजातरहै सोऐसें

तोभी पाषंडी के कबहूं नविराजैं ताते सेवाष्योरी होकरैं यथाशक्तिकरैं ताको कछू बाधक नहीं सोष्योरेही भगवद्धर्मसों वाके सबरे कार्य सिद्धि होय जांय और बहुतकरै और पाषंडसहितहोयतो भगवद्धर्म नबढे ताते अलौकिक सों सेवा करैं सोश्रीठाकुरजीके जानेतेकायहोयगो जो लोगन के जानेतेकछु सिद्ध है नहीं और वैस्नव को यह धर्महै जो उत्तमसामग्री होयसो श्रीठाकुरजीको समर्पै और अपने पासद्रव्य नहोयतो मनमें तापकरिकें कहे जो यहतो प्रभूनलायक है और जहांताईबनैं तहांताईं उत्तमसामग्री तथा नौतनवस्त्र और फलफल योरेहू बनैतो आवस्य लावनो सो गृहस्तीको विचारनाहीं करनो श्रीठाकुरजीकूंतो सनेह अत्यंत प्रीयहै सो श्रीठाकुरजीके चरणारविंदमें ड जहांताई बनैं तहांताईं अंगीकार करावनो और श्रीठाकुरजीको सुगंधादिक अत्यंत प्रीयहै सो यथाशक्ति समर्पै और सुगंधनबनैतो मृत्तिकामें पानीडारि सुगंध के भावतें श्रीठाकुरजीको समर्पै सोऐसे भावतें सगरीबातसिद्धिहोय और श्रीठाकुरजीको तुलसी अत्यंत प्रियहै सो श्रीठाकुरजीके चरणारविंदमें नित्यनेमसों विधिपूर्वक समर्पनी और तुलसी समर्पती बिरियां गंधके अ लोककोपाठ करनो सोश्रीठाकुरजीके चरणारविंदकों संबंध श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी सबौपर जानें

परंतु तुलसीहैसो वृंदाको स्वरूपहै पतिव्रता है और मधुतुलसीके बीजहैं तातें दृढसंबंध भयो जाननो तातें चरणों में समर्पनो जोतब तादिनतासमयतें कृष्ण संबंधभयो तासमय को अपनें गुरुके सनमुख श्रीठाकुरजीहैं सोतिनहीं स्वरूप को आप अपनो जानि श्रीठाकुरजीकोसमर्पै याप्रकार सौंपेचाकहैं तबसे चरणस्पर्शकरैं तबचरणारविंद दृढरहैं सो चरणस्पर्शकरेंतें प्रीतिबढै और तुमारे चरणारविंदमें भक्तसोभक्त सुबुध्यहोय औरप्रकारविचारे और कहीं भक्तिरूपचरणारविंद और लौकिकमें श्रीहस्त परंतु श्रीआचार्यजी महाप्रभूजीकी कृपातें यहपदार्थ प्राप्तभयोहै और प्रभुनोंको चरणस्पर्श करायोहै तहांपूतनामोक्षमें श्रीआचार्यजी लिखेहैं जो पूतनानें सोलह हजार बालकनसों प्राण सोखे सोपूतनाको प्रभु दुष्टभावतें मोक्षकीये और बालकहू भक्तभावसों श्रीठाकुरजीकेहृदे में रहें सोश्री ठाकुरजीनेयह विचारी जो सोरह हजारभक्तहैं सो तिनकूं पूतना राक्षसीके संगतें असुरावेशभयोहै सो असुरावेसजगदीस श्रीठाकुरजी जगदीसहूकहे तोहू मिट्योनहीं तातें भक्तरूपचरणारविंदको संबंधभयो तबअसुरावेसमिट्यो सो यहविचार ब्रह्मांड पाटकी मृत्तिकाखाय बालचरित्रदिखाये सोजनभक्तनकेअर्थ आप मुखमें माटीखाये तबयेऊपरको चरित्र

दिखाय व्रजके वालक तथा वेदरूप श्रीवलदेवजी इननें श्रीयशोदाजीतें कह्यौ जोश्रीठाकुरजीनें मृत्तिका खाईहै इतनी सुनिकें श्रीयशोदाजी श्रीठाकुरजी के पास आई सोडरपयके कहें जोश्रीठाकुरजी सांचीकहौ जो तुमनें माटी क्यौं खाईहै तवश्रीठाकुरजीकहै जोमैयामैंने माटी नहींखाईहै सो यहलीलाकरिअपनी पुरुषोत्तमता जताई सो श्रीवलदेवजी ईश्वरहै तेहजानें नाहिं जो तितनोप्रकार श्रीठाकुरजी जतावें तितनोजानें तवश्रीयशोदाजीको मुखखोलि व्रह्मांडदिखायें सोयह मृत्तिकाको प्रसंग अत्यंत गोप्यहै सोयाप्रकारचरणामृतदेकैं सोल्हें हजार वालक पूतनाके शुद्धकिये तापाछें व्रतचर्या प्रसंगमें चीरहरणलीलाकरी सोचीर देनको चीरहारावदाय इनके पुरुसार्थको स्थापनकीये तवरास की अखंडरात्र जोम्पना दोसन किये सो अलौकिकरात्रि दिखायें और वरदान दिये जो सरद में दानलीलाको दानहोयगो जोकाहेते जोचरणारविंदके संवंधतें सर्वसिद्धिभई तातें चरणामृतलेनों श्रीतुलसी चरणारविंद पेसमर्पनी और चरणस्पर्शी करनो याप्रकार नेमराखें तवभक्तवढे तवपुष्टिमार्ग के फलकीप्राप्तिहोय और तुलसी हैसो जितनोभगवद्धर्महै तितनोपतिवंधहै जितनोसवकरिकरि अलौकिकदेहकी दाताहैऔर

तुलसीको अलौकिकस्वरूपहैं सोईकहैं जोपुष्टिमार्ग में मुख्य श्रीस्वामिनीजी विना रंचकफलकी प्राप्ति नहीं हैं सो तुलसी श्रीस्वामिनीजी के अंग को गंधहै तातें श्रीठाकुरजीको अत्यंत प्रियहै सो॥ श्लोक

प्रियोगंधंचसुरभी तुलसीचरणाप्रिया
समर्पयामि हृदेहा र हृदेमेवलौकिकं१

सो याभांतिसों तुलसी वडोपदार्थहै औरपतिव्रता पार्वती जानकी इत्यादि कनकी आदि देवकपतिव्रताहैं सो गोविंदस्वामीगायेहैं ॥

श्रीअंगप्रभृतिजेतीजगजुवती
वारफेरिडारी तेरे रूपपर ॥१॥

याप्रकार अलौकिकभावजानि तुलसी समर्पे और वृंदारूपतो मर्यादा मार्गकीरीतिसों जगतमेंदिखाये हैं और जादिन श्रीठाकुरजीकी सेवा नपा चरणस्पर्शनवनें तादिनको जाननों जोमिथ्यागयो सोयह जानि तापकरनों और बारंबार अपनें रूपकी भावना करनी सोयह भाव अत्यंतदुर्लभहै और दासभावपायकें प्रभुकी टहलकरनी तातें प्रभुप्रसन्नहोंय और विचारकें अपराधकोंभयराखनों भयविनाप्रीतिनहोय और स्नेहतो अत्यंतदुर्लभहै तातें प्रभुन को भय हैसो वडोपदार्थ है और स्नेहविना सगरी क्रिया वृथा जाननी सो याप्रकारसों भगवद्सेवाको नेम आपने पुष्टिमार्गको धर्म भगवदीय सों

मिलिकैं आवनों और भगवद्धर्मतें श्रीठाकुरजीमें स्नेह होय और दुःसंगमें अपनो धर्मजायवेमें भयहोय और सत्संगतें सदाभक्तिहोय और धर्म तब सब पापरूपकभायो तातें भगवदीयतें प्रीति सहित मिलाप राखें तातें याको कल्याण होय याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति वैष्णवन कों सिक्षादीयेहैं इतिश्रीबाईसमों वचनामृतसंपूर्णम् ॥२२॥

अब औरहू श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति कहतहैं जो वैष्णवकों सखड़ी अनसखड़ी को विचार राखनों और न समझत होय तौ पुष्टिमार्गीय भगवदीय सों रीति भांति पूछनी और वैष्णव को सामग्रिमें और महाप्रसाद में विचार राखनों जोसामग्रीमें श्रीठाकुरजीकोसामग्री जाननीं आपनीसमान जाननी सामग्रीकी सेवाजब होय तासों जलसों हाथधोय विवेकविचार सहित स्पर्शकर अच्छो भावनीक वैष्णवहोय ताके हाथसिद्धि सामग्री दिवानी तथा टहलकरवावनों और जहांताईं बनै तहांताईं सिद्धसामग्रीको कार्य आपुही करनों और जो शाकादिक की सामग्री बजारतें मंगावें सोनामधारी बिनाकाहूपैनमंगावें और जोबनै सो छोटीमोटी सेवा आपुहीकरैं और जो कुटंबतें ज्ञाति अत्यंतप्रीतिहोय तासों कराये औरआप पवित्रतामेंरहें और पवित्रहीकार्यकरैं और र

सोई सुद्ध पोतके राखें और राजभोग पाछें पात्रादिक मांजिकें धरें और सखडी में वड़ी पवित्रता राखें सो एक एक से छीजाय और आपपवित्रतासें वुद्धकी हीनता होय तातें मलिनतासों न रहनों और मैले वहुत वस्त्र न राखनों सो कोहेतें जो वैस्नवके पास वैस्नव वैठें तव भगवद चर्चा वार्ता करें तहां सर्वथा प्रभु पधारें सो तिनको उन वस्त्रनतें वास आवे सो यह भाव जानिकें वस्त्र उज्वल राखें और भगवद मंदिरमें आपुको जानों परै तव ग्लानि आवे तातें पाटमोटेको कछु चिंता नहीं अपने देहके अर्थ जैसो वनै तैसो पहरें परंतु वह मैलो न राखें और अपनें देहके अर्थ काहूके दिखायवेके अर्थ आछो कपड़ा नाहीं पहरें यह दास को धर्म है और सूकर स्यारस गंधर्व कुत्ता कौवा नीचजाति चांडाल भंगी चमार आसुरी सूतकी रजस्वला छापकी इत्यादि कनकों छुवैतौ तत्काल न्हाय डारै और छीवेको स्पर्शतें सककालको छुयो दिन मेंही न्हाय रात्रको छुयो रात्रमें न्हाय वह वेद स्मृतिशास्त्र में कह्यो है और महाप्रसाद उत्तम ठौरको लेय याप्रकार आचार विचारसों रहे और याप्रकार पुष्टिमार्गकी रीति में न समझै तौ भगवदीय वैस्नव तें पूछो चाहिये और उत्सवादिकको लोप न करनो नहीं क्योंकजव उत्सव आमत है तव श्रीठाकुरजीको

परम आनंद होयहे जो फलानो उत्सव आवतहे और श्रीठाकुरजीको उत्सव न करावे तो श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होयजाय ताते उत्सव यथाशक्ति सर्वथा करनो सो विधिपूर्वक करनो और मनमें दुखपाय के न करनो और काहूके आगे अपनी बड़ाई न करनी जो मैंने उत्सव कीयो और लौकिक वैदिक कार्य आयपड़े तो टारनो नहीं आपने कार्य आयपड़े तो वैस्नव के घर तथा अपने घर वैस्नव पास करावे सो लौकिक कार्य अर्थ अलौकिक श्रीठाकुरजीको उत्सव टारे तो श्रीठाकुरजी कुदे और जीवनके ऊपर अप्रसन्न होय ताते अलौकिककार्यमें मन राखे और लौकिक वैदिक आवस्यक होय सो करे और पुत्रादिकको ब्योहार करे और जहां पुष्टिमर्यादा होय तहां तिनके घर पुष्टिमार्गकी रीति सो महाप्रसाद लेय और अन्यमार्गकी रीति होय तो महाप्रसाद न लेनो और लौकिक कार्य करनो होय तो श्रीठाकुरजीको वस्त्र सामग्री पहले करनी और लौकिकको कार्य पाछे करनो और जात जिमावनी होय तो प्रथम श्रीठाकुरजीकी सामग्री करे पाछे श्रीठाकुरजीको भोग धरे तापाछे वैस्नवको लिवावे और वैस्नव लिवाये पाछे श्रीनाथजीकी तथा गुरून की यथाशक्ति भेंट धरे और श्राद्धादिक वैस्नव को न लिवावे और सदा जाके घर लेत होय

सोभांति को लिवावे और लौकिक सोभाब्राह्मण और ज्ञाति को लिवावे और लौकिककार्य में वे सबकों नखिलावें ताते और के करेको प्रयोजननहीं और लौकिकमें कोईजातिकोबुरो मानेंतो वाकों प्रसाददेकें प्रसन्नकरें ताते अपनी मार्ग की निंदान करावे जो काहेते कदृढ़ भक्तभईनाहीहै ताते भयनिंदातें दुःखहोय और यहदुःख सुखकारि धर्मकोजानेंनहीं सेवाकों तों कछूलौकिकनाहीं और केवल अलौकिक कार्य है सो याप्रकारसों रहनों औरजहांतांई भक्तदृढ़नाहीं तहांतांई यहजाने जोमेरीभक्त में कोई प्रतिबंधनकर और लौकिकवैदिक करें ताते श्रीठाकुरजी की सेवा निर्विघ्नतातें रे और जीवनमें खेदहोय सो नकरे और पुष्टिमार्गीयसों कोईबातको अंतरानराखे और कपटछल भगवदीयसों नराखें और लौकिकवैदिकको कार्य हितनजानें सो यहपुष्टिमार्ग कीरीति सर्वोपरजानें और इन इन्द्रीयनके विषयादिकनतें श्रीठाकुरजीकौ आवेसजातोरहे औरकहे विसयकोतदेहानो नामवे सर्वथा हरे सो याप्रकारकरिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी कहेहें सो साधनवरावरधर्मनहीं सो वैसवको वहुत कठिनहै और वैसवको विवेकविचारिकें सर्वकार्य करनों देसकालअपनो समयको औरबुरेको निकटनजानो और वासंभ

थनहू न करनों देश काल अपनों स्वारथ विचारिकें कार्य करनों तौ सेवाव नैंसो उत्तमतें उत्तम भूमिजानिकें जो जहां श्रीपुरुषोत्तमकी नित्यलीलास्थितिहैं और रात्रकों सयन करनो तवप्रातकाल की सेवा कों स्मरण करनो और श्रीठाकुरजी महाप्रभूजीके कीर्तनकरिसोमनों और कीर्तन न आवैतो श्रीमहांप्रभूजीको श्रीगुसांईजीको तथा गुरुन को स्मरण करिकें सोमनो सो सवनकेनामतें सवरोदिन खोटो खरोवोल्यौ होयतौ सवसुखरूप होयजाय तेसें रात्रकें फलतें सगरे दिन को प्रसाद दूधवतगुनकौ तासमय चरणामृत लेसोवैतौ वाकोदुःख सपनमें हू नहीं आवै और निद्रातौ मृतकवरावरिहै सो स्वासआवैतथा नहीं आवै तातें चरणामृतकौ संवंधमुखमें वन्यौरहै सो सर्वथा दुरगति न पावै याप्रकारसों वैष्णव याकालमें सावधान होयके रहैं तवबचे सो याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति कहैहैं २३॥ इतिश्रीतेईसमों वचनामृत संपूर्ण॥

अव श्रीगोकुलनाथजीचोवीसमोंवचनामृत कहतहैं जो वैस्नवकों यहभावराखनौं जोमेरो भगवदीयसों अंतरायनहोय यहभावराखनो और सेवाके अर्थ लौकिक कुटंवको परोसी तथा राजादेसकाल सगरे दुखसहनो और जाननोंजोयह दुःखहैसोदेह संवंधहै सो कोईक हाकरैंगो और भगवदसेवा मोकुं कहियेऔर·

दुख सुख तो स्वर्गते लेके जगत मे जहां ताई करे तहां ताई सिद्धि है परंतु भगवदसेवा तो बहुत दुर्लभ है तब अत्यंत प्रभु कृपा करें तब भगवद्सेवाको संयोगननें और आपने ननमें यह जाने जो जहां ताई यह देह है तहां ताई यह दुःख है और लौकिक दुखमें तेरे संग नाहीं है ताते दुख सुख पायके रहै और कहे जो यह सेवा मेरे जन्मजन्म को कल्याण करत है ताते या जन्म में दुखभयो तो कहा परंतु सेवा तो बनत है और अलौकिक वैदिकके लिये देसदेसनमें कितनो दुख सहत है सो तो तुच्छ पदारथ है और यहो अलौकिक भगवदसेवा ताके अर्थ जो दुख पावै सो आनंद पायके सहनो और भगवदसेवा मन लगायके करनो और श्रीठाकुरजीकी सामिग्री तथा नेग बांधे सो नेग रंचकहू घटावै नहीं ताते अपनी सामर्थ्य देखिके नेग बांधे और नेग बांधे पाछे न करै तो प्रभु नेग बिना दुख पावै सो लौकिक दृष्टांत ते जाननो जैसें कोई वैष्णवको महाप्रसाद लिवावनो सो वाको एक दिन घटती धरै तो वह भूखे रहै ताते भावते विचारिके नेग बांधनो और जो कोई वैष्णव सेवा मे चतुर होय तो वाको सेवा मे राखनो और काहूको सामग्री आवै कोई बीडा आछो बांधि जानै कोई सुंदर माला गूंथ जानै और कोई सुगंध अतर फुलेल अरगजा चोवा और रीति भांति जानै

तौ वाकौं सेवामेंराखे और कोई कुल्हेटियारो वस्त्रनमें बांधिजावे तौ तिनसों करावे सोयाप्रकार सों प्रीतिपूर्वक सेवाकरै और तामें बहुत गुण जाने और थोरोसोआवतहोयतौ ताबैस्नवकौं श्रद्धा पूर्वक पूछनो और कहेपरंतु आपतें ठौर ठौर नकहतडोले और आपनेगुनको अभिमानकरै प्रीतिपूर्वकवैस्नवकौं बतावनें और आपतें नयो वैस्नवहोयतौ वाकों आछो जाननों और वाकी कानिराखनी औरजानजोये वैस्नवहै औरमोतें बडो वडभागीहै औरप्रभुननें इनकौं बालक कालतें अंगीकार कियोहै और भगवद धर्मको छोटो वडोनजानें कृपाकं देखे और काहूकौं सरनिआवतहै सो आछी दिशाहोतहै तबआवतहै और काहूकोजन्म वितीतिहोयजाय और कछून समुझै तातें यामार्गमें बडो छोटोकोप्रमाननाहीं जोयामार्गमैंतो कृपाहीकोविचारहै और पुष्टिमार्गमें शरनआवैतौ जाकों सुजीव जाननोंतौ अपनों धर्मगोपराखनों और जो वस्तुपुष्टीमार्गमें अंगीकारहै सो ताहीकों समर्पे और सोई महाप्रसाद लेय और तरबूजा मूली गाजर इत्यादिकनिषिद्धहोयहै और वेदमेंहू वर्जितहै तातें कबहू नलेय और सास्त्रमें वेंगनहू निसिद्धहै परंतु पुष्टिमार्गमेंतौ लीनहैं तेत सखेनभोगधरिकें लेय और नोंनडारो साक सास्त्रमें सखड़ी कीरीति

सों करनों सो अग्नितें उतारि कें पाछें नोनडारो चहिये योरोवनेसो पुष्टिमार्ग की रीति आछी भांति बहुत बडीहै सो बडीहै और मार्गकी कियासों कछूफल नाहींहै सो गीतामें कहेहैं ॥

स्वधर्म परम: श्रेय:परध
र्मोभयावह: ॥

सो परायो धर्म भय उपजावैहै तातेंकछुकार्यन होय और अपनें पुष्टिमार्ग में रीतिप्रमानकरै योरोहीकरै सो वाधर्मतें श्रीआचार्यजी महाप्रभूजीको आश्रय करैतो वाधर्मनें प्रसन्नहोयसो उत्साह सों प्रभू आनंदकरावैं काहूकी लौकिक प्रतिष्ठा करिकें नकरै तब वामें श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीप्रसन्नहोय और याके प्रभूप्रसन्न होयतब याकों कियो कहा तातें प्रभूनकेतो एकमनहींकी अपेक्षाहोय और श्रीठाकुरजीके तो कोईवातकी घटती नाहीं करें कै वैष्णवता को जैसोभावहोय तैसोअंगीकार करैंतो सोई अंगीकारकरै तैसोई दानकरै तातें वैष्णव अपनी योग्यता छोडि श्रीआचार्यजी महाप्रभूजीको आश्रय करै और लौकिक वैदिकनेष्ठातें तथा विसपनतें अपनो धर्मगोप्यराखें तहां लौकिकव्योहारवनै तो करेजानों तामें जो भगवद्इच्छातें आयप्राप्त होयतामें तें श्रीनाथजीको प्रेमप्रथमकाढ़िये तापाछें गुरूनकी काढ़िमे सो दोऊपेली न्यारी करिकें धरनजैये तथा

गाम में कोई वैष्णव के पास धरत जैये अपने द्रव्यको कवहूं न धरिये सो कहा जाने कोई समय कैसी कठिनता आय पड़ै तो छिन में धर्म छूटि जाय यह द्रव्य कोई समय भगवद्धर्म को नास करै सो गाम में कोई प्रमानीक वैष्णव होय ताके धरत जैयें सो श्रीजी को भेंट आवै सो तत्काल करि देय और जाने जो मैं ही जाऊंगो और गाम में गुरू होय तो भेंट काढ़ि भेंट करि आवै और दूसरे गाम में होय तो हुंडी करि पठावै और कोई वैष्णव भरोसे को होय तो वाके हाथ पठावै सो काहेतें जो या कालमें द्रव्य और स्त्री ये नास करत हैं सो श्रीभागवत में कह्यो है जो काष्टकी पूतरी को हू संग न करनो क्यों कि चित्र लिखी पूतरी को देखें तें विकार मनमें होत है तातें पराई स्त्री को सर्वथा त्याग करनो और वाको कालरूप जाननो और श्रीगोवर्द्धननाथजी के तथा अपने गुरून के दर्शन की सदा सर्वदा आरति राखनो और यह जाननो जो मैं दोय चारि वेर आयो हूं सो ज्यों ज्यों दर्शन करे त्यों त्यों अधिक ताप करनो जाने जो दर्शन करिवे को फल कृपा करिकें दीनो है और याही भांति श्रीयमुनाजी के जलपान को ताप राखनो और श्रीगोवर्द्धननाथजी के टहलुआ व्रजमें रहत हैं तिनसों दोषभावना राखनो जो काहे तें कि वैदिक शास्त्रमें कहे हैं जो या जगत में यह व्रज श्रीठाकुरजी को क्रीडन मंडल है

सो सगरो जगत काठकी पूतरीवतहै सो प्रभु उनकों नचावतहैं जैसें नाचतहैं तातें काहूको दोष न देखें और आछीबात होयसो समुझावे और न समझतहोयतो भगवदिच्छाजानें तातें दोषबुद्धि नराखे तामें व्रजसंबंधहै सो प्रभु कहेहैं जो प्रभुके विचारे विना प्रभुके गाममें प्रभुके पास कैसेरहें तातें उनको अलौकिककरिजानें उनकी सेवा टहलबनेंसोकरें और आप उत्तमस्थलमें अपराध को भयराखें और ठौर के अपराध तो उत्तमस्थल में गये ते छूटें और उत्तमस्थलको पापवज्रलेपहोयजाय सो कैसें छूटें तातें अपराधको सर्वथा भयराखें सो उत्तमस्थलको भयराखके खोटीबातनकरें और काननतें सुनें बी नाहीं तबभाव दृढहोय तबप्रभु प्रसन्नहोय और श्रीभागवतमें एक दोय अध्याय को पाठ करनों और एतन्मार्गकी ग्रंथनकी टीका को श्रवणकरे विना प्रभुन में मनलागे नाहीं सोकाहेतें जो ग्रंथनविना पुष्टिमार्गको सिद्धांतको न जानें और वैष्णवनके मुखतें सुनें तब श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसांईजी को पुष्टिमार्ग को सिद्धांत सेवा क्रिया संपूर्ण अलौकिक ग्यान होय तब प्रीतिबढे सोतबप्रीतिउपजी तब याको संपूर्णकार्य सिद्धिभयो और श्रीसुबोधनीजी श्रीवल्लभकुल को आवे हैं सो सुनें तथा निवेदनी के मुखतें सुनें सोलीला को भाव अ

पनें हृदेमें शुद्ध करिकें राखें जो काहेतें जो भगवदमहात्म ज्ञानविना प्रीतिनहोय और सुने विना ग्यान नहोय ताते भगवद वार्ता श्रवण आवस्यकारें सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूजी नवरत्न मेंकहेहें जो हम निवेदन कियेहें परंतुभगवदीयके संग विना श्रवण कियेविना ग्यान नभयो तो प्रीति नहोयतो प्रीतिनहोयतो प्रभुप्रसन्न नहोय जैसे जगत में द्रव्यकोग्यान हे तैसें द्रव्य तें प्रीति होय जोकाहेतें जोद्रव्य के गुन ग्यानते संसारमें सर्व ग्यान होतहे सो याहीतें होतहे तैसेई प्रभुनके गुन ग्यानते प्रभुनकोगुनग्यानहोय सोसर्वोपरजानि प्रीतिहोय तातें संपूर्ण अलौकिक कार्य सिद्धिहोय और एतन्मार्गके अष्टछापके कीर्तन गावे तथा सुनि वेमेंप्रीतिराखें सो काहेतें जो पुष्टिलीला के दर्शन अष्टछापमें हैं और अन्यमार्ग के कीर्तन जगतमें अंसकला तें प्रगटहोतहें तिन के हेततें यहजानें जो अन्यमार्गीय कीर्तन अपने श्रीठाकुरजीकीलीला नहीहें यहजानिकें कीर्तन नसुनें जैसे कोई एतन्मार्गके कीर्तन अष्टछापके गावें तिनको नसुनें और जैसे जमुनाजल और के पात्रमें होय तो पुष्टिमार्गीय कैसें पीवें जोपीवें तो भ्रष्ट हेजाय जैसेई अष्ट छापके कीर्तन गावें जाकेमुखतें सुनें और श्रीठाकुरजीकी सेवा तथा दर्शन करिकें निकसे तव पीठफेरिकें वाहिर निकसें और दंडोत करें·

तापाछें और ठौर जायतब अपराध निवारनहोय और श्रीठाकुरजीके सन्मु दंडोतकरे परंतु श्रीठाकुरजीके पीठपाछें दंडोत नकरे तहां वेठहू नहीं सो काहेतें सो श्रीठाकुरजीके पीठ पाछें वहिर्मुखताहे सोयाको होय सो दामोदर लीला के प्रसंगमें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी लिखेहैं जो श्रीयशोदाजी श्रीठाकुरकों पकरन कों आई तवश्रीठाकुरजी भाजे सो ज्योंज्यों श्रीठाकुरजीभाजे त्योंत्यों पीठदीसी तव क्रोध बढ्यो और स्नेह छूट्यो तवश्रीठाकुरजीबंधे तातें प्रभुनके सनमुख वैठनो और आपने गुरुन को स्वरूप अपने हृदेमें राखिदंडोतकरि विज्ञप्तिकरें जो महाराजमे संसार समुद्रमें बूडतहो तातें आपबांह पकरिकें काढोतो निकसिजाउं और मेरी सामर्थ्यतो निकसिवेकी नाहीहें सो मैं आपकी शरनहों आपकी सेवाकों चोरहूं और साधन करिकें हीनहूं और आपकी शरन विना आश्रय विना और उपाय नहीं है सोमें से पतित कों कृपाकरि के उद्धार करिवेवारे आपुहीहो सो आपकृपाकरोगे तव प्रसन्न होऊंगो और श्रीठाकुरजी अपने घरमेंहैं तातें नित्यनेम सों दोउन कों राखें और मुखारविंदरूप श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी हैं या भावतें पुष्टिमार्गमें भावही मुख्यहै सो लौकिक दृष्टांततें कहतहैं जो एकदेहसंबंधएकभाव संबंध सो

आपनी बेटी अपने देहतें और देहसंबंध मातें जो अपनी बेटी अपने देहतें प्रगटी है परंतु पराये घर जाय और पाली पोखी है तौहू अपने घरकी नारी है और वह काहूकी तो पाली पोखी है और काहूकी बेटी है सो भावसंबंध तें घर में आई और मालिकनी भई जो काहे तें जो वहां भावसंबंध दृढ़ है सो जैसे देहसंबंधी पाद्व तीनको छोह भयो और भावसंबंधी जे भक्त तिनको अपनपौ दीयो तैसेई श्री आचार्यजी पुष्टिमार्ग प्रगटि करिके जीवन कूं ब्रह्मसंबंध कराये और भाव संबंध दृढ़ करि दीयो सो ऐसो दान भयो है परंतु पतिव्रतधर्म में चले तौ प्रभु प्रसन्न होय सो तैसेई वैष्णव साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम को अपने पति जानें और इन ही के सेवा स्मर्ण में तन मन धन समर्पन करे तो प्रभु प्रसन्न होय सो याप्रकार कृपा करि कें श्री गोकुल नाथजी आप कल्याणभट्टसों कहे हैं और याके यह आज्ञा कीये हैं जो यह पुष्टिमार्ग कों सिद्धांत अत्यंत गोप्य है सो काहूके आगे मति कहियो और केवल अनन्य भगवदीय होय तासों कहियो यह हमारी सिक्षा है सो तुम जानोगे ॥२४॥ इति श्री गोकुल नाथजीकृत चौबीसमों वचनामृत सम्पूर्णम् ॥ हस्ताक्षर पण्डित केशवदेव गौड़

ब्राह्मण शहर श्रीमथुराजी के ॥